जय माता दी

माईसर माता का मंदिर - एक तीर्थ स्थल

सिद्ध शक्तिपीठों की कथा

मान्यता है कि माता पार्वती अपने पिता के मुख से अपने स्वामी का अपमान सह न सकी और हवनकुंड में कूद कर सती हो गई, जिस घटनाक्रम से क्रोधित होकर आशुतोष भगवान शिव ने माता सती की पवित्र देह को उठाया और दशों दिशाओं में घुमाया। पुराणों में ऐसा वर्णन आता है कि जहाँ-जहाँ माता सति के पवित्र अंग और आभूषण गिरे वहाँ-वहाँ पर सिद्ध पीठ के रूप में माता विराजमान हुई।

माईसर माता की कथा का संबंध

माईसर नाम से तीन स्थान 'सिद्ध क्षेत्र' माने जाते हैं। प्रथम 'त्रिलोकपुर' जो इस समय हिमाचल प्रदेश में सिद्ध पीठ है, द्वितीय 'माईसर खाना' जो पंजाब के प्रसिद्ध शहर भठिंडा के निकट है और तीसरा 'माईसर माता' जो पटियाला और कैथल जिले के मध्य शादीपुर गाँव में स्थित है। शादीपुर से मात्र पाँच किलोमीटर की दूरी पर समाना शहर पड़ता है, जो "नवाबों का शहर" नाम से भी प्रसिद्ध रहा है। माईसर माता की कथाओं का संबंध इस शहर से काफी रहा है।

माई का सर (तालाब)

आज से तीन सौ उनहत्तर वर्ष पहले लक्खी बंजारा नाम के एक सज्जन व्यक्ति ने शादीपुर गाँव में माईसर माता मंदिर की स्थापना की थी। 'बंजारा' शब्द का अर्थ है - बैलों पर अन्न लादकर जगह-जगह बेचने वाला व्यक्ति, व्यापारी या फिर सौदागर। लक्खी बंजारा समाना इलाके और आस-पास के क्षेत्र में प्रसिद्ध सौदागर था। लक्खी बंजारे की व्यापार कुशलता और उसके सद्व्यवहार की कई कहानियाँ प्रचलित है। एक कथा के अनुसार समाना शहर के एक सेठ महाजन के साथ लक्खी बंजारे ने कोई सौदा किया था। उन दिनों लेन-देन काफी साफ-सुथरा एवं सत्य पर आधारित हुआ करता था। लक्खी बंजारे ने जमानत के तौर पर अपना सबसे प्यारा कुत्ता सेठ महाजन के पास गिरवी रख दिया था और वादा किया कि सारी उधार राशि चुकाने के बाद ही वह कुत्ते को वापस ले जाएगा। कुत्ता बड़ा समझदार, वफादार एवं चुस्त-चालक था। एक बार सेठ महाजन के घर चोरों ने चोरी के लिए सेंध लगाई। कुत्ते ने चोरों की इस मनसा को जांच लिया और बिना भूखे सारी चोरी की वारदातें देखता रहा। चोरों ने सेठ महाजन का सारा धन चुराया और सारा धन लेकर समाना से पूर्व दिशा की ओर चल पड़े। कुत्ता उनके पीछे-पीछे चुपचाप चलता रहा। लगभग तीन कोस चलने पर सुबह होने के खतरे को समझते हुए चोरों ने सारा धन एक छोटे-से जोहड़ (तालाब) में डुबो कर छुपा दिया। कुत्ता भी यह सब कुछ देख रहा था। सुबह आँख खुलने पर सेठ महाजन ने जब अपना घर खाली देखा, तो वह रोने-पीटने लगा। आस-पड़ोस के लोग इकट्ठे हो गए। सभी लोग आश्चर्य से यह दृष्य देख रहे थे।

अचानक कहीं से वह कुत्ता हाँफते हुए आया और सेठ महाजन के पैरों में लोटने लगा और उसकी धोती खींचने लगा। मानो सेठ से कुछ कहना चाहता हो। एक बुजुर्ग और अनुभवी व्यक्ति ने सलाह दी कि कुत्ते का धोती खींचना यह बता रहा है कि वह सेठ को अपने साथ कहीं दूर ले जाना चाहता है। सब ने हाँ में हाँ मिलाई और वे कुत्ते के साथ-साथ चल पड़े। कुत्ता आगे-आगे और जनसमूह पीछे-पीछे कुछ समय चलने पर कुत्ता उनको वहीं ले गया, जहां चोरों ने धन गाड़ दिया था। सेठ महाजन और साथ आए लोगों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। फिर उन्होंने पानी में दबाया हुआ धन प्राप्त किया और सकुशल वापस आकर सेठ महाजन ने कुत्ते को बहुत प्यार किया। उसको अच्छे-अच्छे पदार्थ खाने को दिए और उसके गले में एक पट्टा बांधा गया जिस पर लिखा गया था। " हे लक्खी बंजारे! कुत्ते की वफादारी और समझदारी से चोरों द्वारा चुराया गया मेरा सारा धन वापस मिल गया है। अतः मैं तुमको कर्ज मुक्त करता हूँ और यह समझदार वफादार कुत्ता आपको वापस भेजता हूँ।" फिर कुत्ता अपने असली मालिक लक्खी बंजारे के पास चला गया।

इस कथा के अनुसार सेठ महाजन का धन जिस जोहड़ (तालाब) में डुबो कर छुपा छुपाया गया था। वह माईसर माता का ही तालाब था, जिसे माई का 'सर' (तालाब) भी कहा जाता है। सेठ महाजन को उस समय भी वहाँ पर शक्ति का आभास हुआ था। वर्तमान समय में अनुकूलता के अभाव में उस तालाब को मिट्टी से भर दिया गया है। सारी जमीन समतल करवाई गई है और आज उस पर बागवानी शोभा बढ़ा रही है।

लौंकड़िया मंदिर

सेठ महाजन और लक्खी बंजारे ने माता के मंदिर की स्थापना करके नियमित रूप से पूर्ण श्रद्धा भक्ति से पूजा-अर्चना की और अपना शेष जीवन माई की सेवा में समर्पित किया। इनके अंतिम क्षणों में इनकी भक्ति से प्रसन्न होकर महामाई ने अपने दिव्य दर्शन दिए और वरदान मांगने को कहा। दोनों ने माता की स्तुति की और वरदान स्वरूप माता के चरणों में लीन रहने की प्रार्थना की। माता ने आशीर्वाद दिया कि तुम मेरे परम भक्त हो मेरे लौंकड़िया के रूप में आपकी ख्याति होगी। आज भी माता के मंदिर के उत्तर में लौंकडिए का मंदिर है, जिसमें दो मूर्तियाँ विद्यमान हैं। इस मंदिर में बच्चों के लिए प्रार्थना मांगी जाती है और माता अपने लौंकड़ियों की इच्छा आज भी पूरी करती है।

लक्खी बंजारा ; एक सच्चा व्यापारी

लक्खी बंजारा अद्वितीय प्रतिभा का व्यक्ति था, जिसका जन्म सन 1619 में एक साधारण बंजारा परिवार में हुआ था। वह लुबाना जाति का था। बंजारे के रूप में व्यापार उसका पेशा था। समाना इलाके में व्यापार के समय उसकी आयु लगभग 35 वर्ष की थी। माता माईसर देवी के आशीर्वाद से उसका व्यापारिक कार्य बहुत बढ़ गया था और धीरे-धीरे उसने अपना निवास स्थान दिल्ली में बना लिया था। मूल रूप से लक्खी बनजारा पंजाब का रहने वाला था। दिल्ली में रहकर उसका व्यापार पूरे भारत में फैल गया था। लक्खी बंजारे ने देश के अनेक स्थानों में माता के मंदिर बनवाए तथा अपना पूरा जीवन माता के चरणों में समर्पित कर दिया था।

माईसर माता के दोनों रूप

सच्चिदानन्दरूपा भगवती महामाया ही संपूर्ण विश्व को सत्ता, स्फूर्ति तथा सरसता प्रदान करती है। कोई इस महाशक्ति को निर्गुण तो कोई सगुण मानता है। माईसर माता के ये दोनों ही स्वरूप हर समय विद्यमान रहते हैं। जो जिस भाव से उन्हें देखता है, उसे माता का वैसा ही रूप दिखाई देता है। वस्तुतः दोनों ही स्वरूप एक ही हैं, भेद केवल प्रतीतिमात्र का है।

चैत्र में मेला शुक्ल पक्ष की नवमी को ही क्यों

माता का एक सेवक भक्तों को पानी पिलाया करता था। उसने माता के मंदिर के पास आने वाले रास्ते पर पानी की छबील लगाई हुई थी। धीरे-धीरे उसका मन माता की भक्ति की ओर बढ़ने लगा। वह माता की भक्ति करता और भक्तों की सेवा करता। उसने एक नियम बना लिया था कि माता के नवरात्रों में वह माता बालासुंदरी के दर्शन करने त्रिलोकपुर जाता और दर्शन के बाद ही प्रसाद ग्रहण करता था। माता भी अपने भक्तों को पहचान लेती है एक बार चैत्र के नवरात्रे थे लेकिन भक्त बीमार हो गया और माता के दर्शन करने त्रिलोकपुर नहीं जा सका। माता के अन्य सभी भक्तों ने प्रसाद ग्रहण कर लिया लेकिन सच्चा भक्त तो सोच में था कि मुझे माता के दर्शन नहीं हुए। मैं भोजन कैसे ग्रहण कर सकता हूँ। अष्टमी की रात को माता अपने प्रियभक्त के पास साधारण रूप में आई और कहा कि बेटा आप कई दिनों से भूखे हो, खाना खा लो। भक्त ने कहा, मैं माता के दर्शन के बिना कैसे भोजन कर सकता हूँ। अपने भक्त की निस्वार्थ भक्ति से माता अति प्रसन्न हुई और बोली, बेटा तुम मेरे पास नहीं आ सके, तभी तो मैं तुम्हारे पास आई हूँ। अब तुम भोजन करो। फिर माता ने आशीर्वाद दिया कि मैं अष्टमी तक अपने स्थान पर रहूंगी और नवमी को माईसर माता के रूप में प्रकट होकर अपने सभी भक्तों की इच्छाओं को पूरा करूंगी। भक्त का तो जीवन ही सफल हो गया था। तभी से माईसर माता का मेला चैत्र शुक्ल पक्ष की नवमी को ही संपन्न होता है।

प्रिंसीपल डॉ. मोहन लाल शर्मा

शिक्षाविद, विद्वान, लेखक, सामाजिक कार्यकर्ता, पुरस्कार विजेता